ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

प्रेम और स्वानुभूति के विलक्षण कवि घनानंद

डॉ. तृप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग
अदिति महाविद्यालय बवाना
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

स्वच्छंद काव्यधारा में घनानंद का स्थान सर्वोपरि है। रीतिमुक्त प्रेममार्गी कवियों में इनकी गणना कनिष्ठका में होती है। घनानंद के काव्य में 'सुजान' के प्रति अनन्य प्रेमभाव को दर्शाया गया है। कवि ने अपनी स्वानुभूति तथा अपनी प्रेम की पीड़ा और प्रेममार्ग के बाँकेपन को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है।

रीतिकालीन स्वच्छंद काव्यधारा के इस विशिष्ट कवि की रचनाओं के अनुभूति पक्ष पर जब हम विचार करते हैं तो पाते हैं कि घनानंद के काव्य का मुख्य विषय प्रेम और भक्ति है। प्रेयसी सुजान के अप्रतिम सौन्दर्य के आकर्षण में घनानंद पूर्णतः डूबे रहते थे। कवि सुजान नामक मुसलमानी दरबारी नर्तकी के प्रेमपाश में बंधे हुए थे। किन्तु दरबारी षडयंत्र के तहत् जब कवि को बादशाह राजदंड देते हैं तो सुजान उनके साथ चलने से इंकार कर देती है। प्रेयसी की उपेक्षा से दुःखी होकर वह वृंदावन पहुंचते हैं जहाँ उनका यह निर्वासन के पूर्व का प्रेम निर्वासन के पश्चात भक्ति में परिणत हो जाता है। सुजान का प्रेम वह जीवन भर भूल नहीं पाते और सदैव उनके वियोग में व्यथित रहते हैं। घनानंद का सुजान के प्रति प्रेम में तीव्र भावावेग सर्वत्र दर्शनीय है। एकपक्षीय प्रेम की असफलता ही बाद में भक्ति में परिणत हो जाती है। प्रत्यक्षतः उनके काव्य में प्रेम का प्रधान आलंबन प्रेयसी सुजान ही है। लेकिन गौण रूप में कृष्ण और राधा या गोपिका भी है। घनानंद के काव्य का समग्र अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उनके काव्य में प्रेम और भक्ति का समन्वित रूप दिखलाई पड़ता है। घनानंद ने प्रेम का विस्तारपूर्वक निवेदन अपनी रचनाओं में निवेदित किया है। उनका काव्य-प्रेम आंतरिक भावानुभूतियों से भरा हुआ है। अनेक रचनाएँ घनानंद के विशुद्ध प्रेमी स्वरूप की प्रस्तुति करती है। इन रचनाओं में प्रेयसी सुजान के सौन्दर्य चित्रण, चेष्टाएँ, क्रियाव्यापार, प्रेम के स्वरूप और प्रेम से उत्पन्न वियोगजनित पीड़ा को प्रमुखतः स्थान दिया गया है। घनानंद का प्रेम उनके निजी जीवन की धरोहर है। उनकी दुखद प्रेमानुभूति निजी विरहानुभूति ही उनके जीवन की अमूल्य संपदा है जिसे वह जीवन भर संजोये रखते हैं। स्वानुभूति का यह काव्य भी निर्वासन के पश्चात् निबार्क संप्रदाय की

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

भक्ति से लबरेज हो जाता है और प्रेयसी का स्थानापन्न कृष्ण-राधा रूपी पात्र विषय बन जाते हैं। घनानंद ने अपनी रचनाओं में प्रेयसी सुजान को विभिन्न पर्यायवाची शब्दों से नवाजा है। डॉ. मनोहर लाल गौड़ के मतानुसार सब मिलाकर 250 बार 'सुजान' शब्द का प्रयोग हुआ है। सुजान 182 बार, जान 148 बार, जानराय 10 बार, जानी 8 बार, जानमनि 3 बार, ज्यानी 1 बार, इनका अर्थ भी एक नहीं हैं। सुजान शब्द 11 प्रकार के अर्थों में प्रयुक्त हुआ प्रतीत होता है। श्रीकृष्ण के अर्थ में उदाहरणतः-

काहे को सोच मरै जियरा परीतोहि
कहा विधि बातन की है
हे घनआनंद स्याम सुजान साम्हारिहु चातक ज्यौं
सुख जी है।[1]

राधा के अर्थ में

हा हा हे सुजान आजु दीजै प्रान दान नेकु,
आवत गुपाल देखि लीजै बनते बनै।।[2]

राधा के अर्थ में

'जान' अर्थात् 'जीवन के दाता के अर्थ में' जीवहिं जिवाय नीके जानत सुजान प्यारे।[3]

प्रेमी के अर्थ में

नितलाज भरे हित ढार ढरे निखरे सुखरे सुखदायक है।
घिरि घूँघट पैठत जान हिया निपटे निबटे नटनायक है।[4]

इनकी 'सुजानहित' रचना में सुजान के रूप, यौवन अंग लावण्य, मुख की छवि, प्रेयसी की तमाम चेष्टाएँ, वेशभूषा, नृत्यगान का वर्णन अत्यंत मनोयोग से वर्णित है। घनानंद ने सुजान का परंपरागत वर्णन न करके उसकी मनोहारी छवि को अंकित किया है। उनके द्वारा किए गए चित्रण प्रेयसी के पूर्ण शारीरिक सौन्दर्य और विशेष अंगों के सौंन्दर्य से परिपूर्ण है। कवि ने सुजान के शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के सौंदर्य चित्रण नई-नई ताजगी और नई-नई दृष्टियों से गढ़े हैं। उनकी स्वानुभूत, सौन्दर्यनुभूति और आसक्ति द्वारा किया गया सुजान का प्रत्येक वर्णन उसकी छवि नितांत निजी है। घनानंद ने नवीन भावनाओं, नवीन दृष्टि, नवीन कल्पनाओं द्वारा सौन्दर्य के आत्मपरक चित्र खीचें हैं। कवि सुजान के सिर, केश, भाल, घूँघट,

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

श्यामल साड़ी, भौंह, नेत्र, नाक, दाँत, अधर, ग्रीवा, मुख, उरोज, उदर, पीठ और कटि, पिंडली, मुरबा, एड़ी, तलवा, महावर, मेंहदी, समस्त शरीर और आभूषणों के प्रति आसक्ति जाहिर की है। मसलन कुछ उदाहरणों के द्वारा हम इस वर्णन को आत्मसात कर सकते हैं-

श्याम घटा लपटि थिर बीज की सौहें अमावस अंक उज्यारी।
घूम के पुंज मैं ज्वाल की माल सी पै दृग सीतलता सुखकारी।।
कैसी फबी घनआनंद ज्यो पनि सों पटिरी चुनि सांवरी सारी।

चंचल नेत्रों के शरारती रूप को भी उन्होंने चित्रित किया है

झलकै अति सुन्दर कानन गौर छके दृग राजत काननि है।
बड़ी आखियान में अंजन रेख लजीली चितौनि हियो रस पागै।

प्रेयसी की कुंद कली सी दूधिया हंसी उनकी आंखों में एक बार पैठ जाती है तो फिर निकलती नहीं है।

"कंद सी हसनि घनआनंद दृगिनि गरै।"
"रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत त्यौं त्यौं निहारि।
त्यौं इन आखिन बानि अनोखी अघनि कहूँ नहीं आनि तिहारियै।"

नाक वर्णन

बंडै नैंन मतवारे नैनन के बीच परी खरो है निडर ऊँचो रहे रूप जोरते।

गर्वीली गरदन

'सरस सुजान घनआनंद भिजावै प्रान, गरवीली ग्रीवा जब अभिमान पै ठरै।'

सुजान के गुलाबी होंठ से घिरें दांत जब हंसते हैं तब एक ओर कपूर की सुगन्धि बिखरती है और दूसरी ओर गुलाल बिखरता है।

दसन-वसन औली भरियै रहै गुलाल
हंसानि बसनि त्यौं कपूर सरस्यौं पर।

नायिका का पतली कमर का वर्णन अनूठा है-

है किंधौ नाहि लगी अलगी सी लखि न परै। कवि क्यों हूँ प्रमानौ।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

तो कटि भेदहि किंकनी जाननि तेरी सौं एरी सुजान है जानौ।

सुजान के रूप-रस गंध के विचित्र सौंदर्य को कवि ने अत्यंत सुन्दर ढंग से चित्रित किया है। सुजान के यौवन सौंदर्य की तुलना कवि नदी से करते हैं-

अंग-अंग नूतन निकाई उझिलानी छाई
यौन भरी चली सोया नदी लौ उफनि है।

सुजान का अंग-अंग प्रकाश पुंज है। उसके सुंदर कपोलों पर उभरी लट नृत्य करती हैं। उसका हंसना-बोलना मानों फूलों की वर्षा करता है। उसके नेत्र तृप्ति के परिचायक हैं-

झलकै अति सुंदर आनन गौर छक दृग राजत काननि छवै ....।
लट लोल कपोल कलोल करै कल कंठ बनी जल जावलि द्वै।
अंग अंत तरंग उठै दुति की परि है मेना रूप अवै धर च्वै।

सुजान के नृत्य और अंगों की मटकन पर कवि का दिल डोल उठता है।

नाच की चटक लसै अंगनि मटक रंग,
लाडिली लटक-संग लोयन लगे फिरै।
... पांवड़ लौ प्रान रीझि हव कनावड़े गिरे।

सुजान की हंसी देखकर घनानंद का मन काम रस में डूब जाता था। उसका स्वर मदिरा के समान मादक था। सुजान का कंठ मानो सुराही थी, होंठ प्याले तथा पीने वालों के कान कंठ थे।

नाच लटू है लग्यौ फिरे पायनि चायनि चाहे लड़ी
लियै डोलनि, त्यौं सुर-सांच-संवाद सनैं मन
झूठियै लागाते वीन की बोलनि।
नेकु हंसे सु करोरिक चंदनि चेरो करै दुति-दंत आमोलिनी
ऐसी सुजान लखें घनआनंद नैन परै रस मैन कलोलनि।।[5]

सुजान जब महीन स्वर से गीत गाती थी तो लगता था मानो नाराज हो गई हो। उसे अपने रूप पर भी गर्व था।

रूप लाड़ जोबन गरूर चोप चटक सों,

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

अनखि अनोखी तान गावै ले मिही सुरै।[6]

घनानंद की प्रेयसी संगीत, नृत्य, अभिनय तीनों कलाओं में निपुण है। घनानंद उनकी तानों से घायल हो जाते हैं। प्रिया की भाव मुद्राओं पर बलिहारी जाते हैं। अपनी गुण संपन्न, सौन्दर्य संपन्न, कला संपन्न प्रेयसी की प्रत्येक मुद्रा पर वह आसक्त थे। अंततः हम कह सकते हैं कि घनानंद की प्रेयसी अप्रतिम सुन्दरी है, जिसके रूप-सौंदर्य की चकाचौंध से उनकी आँखें भी चुंधिया जाती है।

घनानंद के काव्य में कृष्ण और राधा का सौंदर्य वर्णन

घनानंद के आलंबन पात्र की सौंदर्य चर्चा के पश्चात् हम उनके गौण पात्र कृष्ण और राधा के रूप सौंदर्य की चर्चा करेंगे। जैसा कि विदित है कि निर्वासन के पूर्व की आसक्ति व सौंदर्य पात्रा सुजान है, किंतु निर्वासन के पश्चात् के भक्ति के पात्र कृष्ण और राधा है। इनका भी रूप वर्णन घनानंद ने किया है। लेकिन जितने विस्तार और निष्ठा से सुजान का रूप वर्णन किया है, उतनी लीनता से कृष्ण और राधा का वर्णन नहीं किया। कृष्ण रूप वर्णन के तहत् कवि ने उनकी अंगकांति, वेश सज्जा, रूपाकृति और गति का वर्णन किया है। कृष्ण की अंगकांति, सॉवले सलोने, छैल छबीली रूप छटा पर करोंड़ों कामदेव को न्यौछावर किया है। कृष्ण के प्रति कवि का अनन्य प्रेम वर्णित है।

"सांवरे छैल की आछी अंगेट पै काम करोरिक वारियै जाहि कै।
नैननि बेधि रंगीले गुने गसि माल स्यै मन मानिक पोहि कै।"

घनानंद के कृष्ण की लुभावनी वेशभूषा का भी वर्णन किया है। उनकी बंसी की धुन सुनकर गोपियाँ प्रेमविह्वल होकर लोक-लाज छोड़कर अपनी सुध-बुध खो बैठती है। कवि ने लाल पग बांधे, कंधे पर लकुट रखे, काम सर साधे हुए नेत्र, यौवन से भरे अंगकांति, मन को वश में करने वाली कुटिल अलक आदि का अत्यंत सुंदर तथा आकर्षक चित्र खींचा है।

लाल पाग बांधे धरे ललित मुकुट काँधे
मैन सर साधे सो करन चित छाय का
जोवन झलक अंग रंग तक रंक सधूरी
कुटिल अलक जाल जिये अरूझाये को
गरे गुंजमाल उर राजत बिसाल नख
सिख लौ रसाल अति लोनो स्याम काय को

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

करत अधीर बीर यमुना के तीर
टोना भरयौ डोलत ढटौना नंदराय को।[7]

कृष्ण के छवि चित्रों में कवि ने उनकी बाँकी छवि चित्रित की है। कवि ने कृष्ण-सौंदर्य और सज्जा हेतु जिन प्राकृतिक उपकरणों का वर्णन किया है। वो भी उनकी स्वच्छंदता की प्रवृत्ति का द्योतक है। कृष्णलीला के अंतर्गत कवि ने दानलीला संबंधी चित्र भी चित्रित किए हैं।

छेल नए नित रोकत गैल सु फैलत कापै अरैल भए हैं।
लै लकुटी हंसी नैन नचावत बैन रचावत मैन तए हैं।
लाज अयै बिन काज खगौर तिनही सो पगौ जिन रंग-रए है।
ऐंड सब निकसैगी अबै घनआनंद आने कहा उनए हैं।

श्रीकृष्ण के द्वारा गोपियों का मार्ग रोकना, तंग करने का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। गोपियों और कृष्ण के संवाद का छेड़छाड़ कर टैक्स (कर) मांगने का वर्णन भी मिलता है।

दान दिए बन जान न पाइहै आइ है जो चलि खोरि बिरानी।
आगै अछूती गई सु गई घनआनंद आज भई मनमानी।।[8]

बिना दान दिए जाने की बात से गोपियाँ नाराज हो जाती है और कहती है-

जीभ संभारि न बोलत हौं मुँह चाहत क्यों अब खायौ थपरें।
ज्यों ज्यों करी कछु कानि कनौड़ त्यौं मूड़ चढ़े-बढ़े आवत नेरे
खाये कहा फल माय जने, जिय देखो विचारि जिता तन तेरे।
कंज कनेरहि फेर बड़ो घनआनंद न्यारै रहौ कहो टेरे।।[9]

इस प्रकार दान-लीला में प्रेम-व्यंजना के सुंदर चित्र मिलते हैं। होली के अंतर्गत आमोद-विनोद के सरस प्रसंग भी घनानंद काव्य में मिलते हैं।

राधा नवली सहेली- समाज मैं होरी को साज सजे अति साह।
मोहन छेल खिलार वहाँ रस प्यास भरी अंखियान सो जोहै।
दीठि मिले मुरि पीठि दई हित हेत की बात सकै कहि को है।
सैननि ही बरसयौ घनआनंद भीजिन पै रंग रीझति मोहै।।[10]

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि घनानंद ने बाह्य सौंदर्य के साथ आतंरिक सौंदर्य का भी चित्रण किया है। गोपियों पर कृष्ण का प्रभाव अमिट है। घनानंद की गोपियाँ कृष्ण की हर बाँकी अदा से प्रभावित होती है। कृष्ण के रूप का अतुलनीय प्रभाव समस्त गोपियों पर पड़ता है। अतः घनानंद ने कृष्ण के अद्‌भुत रूप-सौंदर्य का चित्रण अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है।

कविवर ने राधा की चर्चा भी अपने काव्य में की है। कवि ने राधा को आराध्य रूप में ही चित्रित किया है। राधा के रूप-गुण सौंदर्य से कृष्ण प्रभावित होते हैं। कवि भी राधा के सौंदर्य को देख अपना हृदय हार बैठते हैं। होली का एक बहुत सुंदर प्रसंग कवि ने वर्णित किया है-

गोरी बाल थोरी बैस, लाल पै गुलाल-मूठि।
बानि कै चपल चली आनंद-उठान सौं।।
चोटनि करति अति तीखे नैन-बान सो
कोटि दामिनी निके दलनि दलमिल पाय ....
मीड़िबो के लेखे कर मीडि बोई हाथ लग्यो,
सो न लगी हाथ रहयौ सकुची सरवान सौं।।[11]

कृष्ण और राधा की होली में रंग लगाने का अत्यंत सुंदर चित्र अंकित किया गया है। नवयौवना गौरांगी राधा-कृष्ण को गुलाल की मुट्ठी भर कर मारने के लिए उल्लासपूर्वक चलती है। वह बाएँ हाथ से अपने घूँघट को पकड़े हुए थी और छिपकर तीखे नेत्रों के बाण से चोट भी कर रही थी। वह करोड़ों बिजलियों की शोभा को क्षीण करने वाली अवसर पाकर विजयिनी बन बैठी और आकर अपनी सखियों के समाज में मिल गई।

अब बेचारे श्रीकृष्ण को उसके कपोलों को मींजने की जगह हाथ मींजना ही हाथ लगा और वह राधा इनकी पकड़ में न आ सकी। फलतः उन्हें मित्रों की मंडली में लज्जित होना पड़ा। कवि ने राधा की चाल और अद्‌भुत चितवन का वर्णन किया है। लिहाजा हम कह सकते हैं कि कवि ने अपने आराध्य कृष्ण और राधा के सौंदर्य और प्रेम के मिले-जुले वर्णन अपने काव्य में प्रस्तुत किए हैं।

घनानंद और प्रेम

घनानंद के काव्य में वैयक्तिक प्रेम की प्रधानता ही दिखलाई पड़ती है। प्रेम ही उनके जीवन तथा उनके काव्य का प्राणतत्व है। एकतरफा प्रेम में कवि ने जो कुछ भी भोगा और अनुभव किया, उसी को जस का तस

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

वर्णित कर दिया। कवि ने अपनी रचनाओं में अपने असफल प्रेम की पीर का वर्णन किया है। प्रेम में सुजान द्वारा उपेक्षा मिलने पर उनका प्रेम लौकिक से अलौकिक प्रेम में तब्दील हो गया अर्थात् राधा-कृष्ण भक्ति में परिवर्तित हो गया। घनानंद के काव्य में स्वानुभूत प्रेम की पीड़ा का मार्मिक चित्रण हुआ है।

प्रेममार्ग पर चलने वाले व्यक्ति बिरले होते हैं। घनानंद भी ऐसे ही प्रेम पथ के राही हैं, जहाँ वह अपने एकतरफा प्रेम की असफलता के दंश को भोगते हैं। घनानंद मूलतः लौकिक प्रेमपात्र के रसिक थे। इसी से हृदयगत प्रेम की जो लहर उनकी कविता में मिलती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। अपनी लौकिक प्रेयसी मुहम्मदशाह रंगीले के दरबार की नर्तकी, सुजान नामी वेश्या के प्रति घनानंद ने जो प्रणय निवेदन किया है। वह हिंदी काव्य की स्थायी संपदा है। वैसा आत्मनिवेदन, वैसी प्रेमपीड़ा वैसी विरहानुभूति, वैसी आत्माभिव्यंजना वाला काव्य मध्ययुग में लिखा ही नहीं गया। इतना ही नहीं समूचे हिंदी काव्य के सहस्त्राधिक वर्षों के इतिहास में भी ऐसी प्रेम-छाया का चितेरा दूसरा न मिलेगा। आत्मपीड़ा का ही दूसरा नाम घनआनंद का काव्य है। विरह निवेदन या प्रेम व्यंजना की व्यक्तिनिष्ठ शैली हिंदी में बहुत कुछ आधुनिक युग की देन है। पुरातन काल में कविजन आत्मव्यथा या उल्लास को गोपी, कृष्ण आदि अन्य माध्यमों से मुखर करते रहे हैं, परंतु लौकिक प्रेम-भावना का नितांत आत्मगत पद्धति पर प्रकाशन घनानंद का ही काम था। हिंदी काव्य परंपरा में कदाचित पहली ही बार इतने भावोन्मेष के साथ किसी कवि ने अपने निजी लौकिक हर्ष-विवाद का विशेषतः विषाद का चित्रण इतनी व्यक्तिनिष्ठ शैली में किया है। घनानंद के महत्त्व को चिरकाल तक अक्षुण्ण रखने के लिए उनका एक यही युग पर्याप्त है। घनानंद के लौकिक प्रेम और उनकी सुजान के प्रति रीझ-मिलन अथवा संयोग में परिणत न हो सकी। वह चिर-वियोग की गाथा हो गई, इसीलिए घनानंद सुजान के नाम की रट लगाते ही रहे और अंत तक उनकी यह टेक निभती ही चली गई। घनानंद के प्रेम का मार्ग सरल तो है लेकिन वहाँ चतुराई मान्य नहीं है।

अति सूधो सनेह का मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं
तहां सांचे चलै तजि आपुनपौ झझके कपटी जे निसांक नहीं।
घनआनंद प्यारे सुजाने सुनौ इत एक ते दूसरी आंक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला मन लेहु पै देहु छटांक नहीं[12]

कवि का प्रेममार्ग ज्ञानमार्ग से ऊँचा और महत्त्वपूर्ण है। संसार में विद्यमान समस्त प्रेम हरि-राधा के लौकिक प्रेम का ही प्रकाश है जो चारों ओर उफनता प्रतीत होता है।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

प्रेम की पयोदधि अपार हेरि कै विचार
बापुरो हहरि बार ही त फिरि आयौ है।
ताकी कोऊ तरल तरंग संग छुट्यौ कन
पूरि लोक-लोकनि उमंडि उफनायौ है।[13]

घनानंद ने प्रेममार्ग की सभी अड़चनों, व्यंग्य-तानों को भोगा और सहा है। केवल सहनशील व्यक्ति ही प्रेममार्ग पर चल सकता है। अपने आपको भूलकर चलने वाला व्यक्ति ही कष्ट सहन कर सकता है। जो व्यक्ति अपने आपको भूल नहीं सकता, वह प्रेममार्ग पर भी नहीं चल सकता। अपने आपको याद रखने वाला व्यक्ति रास्ते में ही थककर बैठ जाता है।

ज्ञान घनआनंद अनोखो यह प्रेम पंथ,
भूले ते चलत रहै सुधि के थकित है।[14]

घनानंद के काव्य में उनके स्वानुभूत प्रेम की आंतरिक पीड़ा का सुंदर वर्णन मिलता है। इनके काव्य में प्रेम के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का सुंदर चित्रण किया गया है। कवि सुजान के प्रेम में उसकी प्रेमकृपा पाने हेतु बेचैन रहता है और अपने अनुरागी एवं उदविग्न मन को सुजान के प्रेम रूपी दर्शन से ही शांत करता है। घनानंद के प्रेमकाव्य में एंद्रिकता तथा वासना के भाव तो विद्यमान है लेकिन उनका काव्य कामुकता से परे है। घनानंद का प्रेम एकनिष्ठता, स्वच्छंदता तथा पवित्रता के भावों से परिपूर्ण है। संयोग वर्णन में कवि ने आंतरिक संयम का परिचय दिया है। घनानंद स्वप्न में भी संयोग की अनुभूति करते हैं, चाहे वे संयोग स्वप्न के समान क्षणिक एवम् काल्पनिक ही होता है। संयोग के स्वप्न की टूटन उन्हें अत्यधिक दुःखी कर देती है। लगभग 500 छंदों के सुजान-प्रेम विषयक विशद काव्य में केवल उन्होंने 20 या 30 छंदों में संयोग वर्णन लिखा है। संयोगावस्था के वर्णन के अंतर्गत पूर्व संभोग, संभोग और पर-संभोग की स्थितियों का भी चित्रण किया है। कवि संयोग की अल्प अवधि की स्मृति वियोगी जीवन में भी बनाये रखते हैं।

यह कैसो संजोग न जान परै जु वियोग न क्योंहूँ बिछोहत है।

कवि के संयोग जीवन में भी उसे वियोग का भय सदैव बना रहता है। इसका वर्णन कवि बारंबार करते हैं-

"बिछुरे किन संग मिलेह न होति छिदी छतियाँ अकुलानि छुरी।"

वियोग

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

घनानंद के काव्य में वियोग शाश्वत रूप से विद्यमान रहता है, उनके जीवन का चिर सत्य ही विरह था। वह लगातार सुजान-स्मरण और ध्यान में ही मग्न रहते थे। सुजानहित उनकी तमाम मनोव्यथा, पीड़ा, विरह और व्याकुलता की रचना है। अर्थात् सुजान के हित यानि प्रेम में व्यथित हुए घनानंद की अपनी व्यथा ही कविता का रूपाकार ले पायी।

इसलिए ब्रजनाथ की उक्ति अत्यंत सार्थक मालूम पड़ती है-

समुझै कविता घनाआनंद की हिय ऑखिन नेह की पीर तकी।[15]

कवि ने 'सुजान हित' के एक ही छंद में अपने तमाम मनोभाव प्रेयसी के प्रति प्रेमनिष्ठता, प्रेयसी की निष्ठुरता, प्रेयसी के प्रति उपालंभ, प्रेयसी से दया-याचना, प्रेयसी के प्रति शुभाकांक्षा और शुभेच्छा वगैरह भाव मिलते हैं।

हीन भए जलमीन अधीन कहा कछु तो अकुलानि समानै।
नीर सनेही को लाज कलंक निरास हवै कायर त्यागत प्रान
प्रीति की रीति सुक्यौ समझै जड़ मीन के पानि परै को प्रमानै।
या मन की जु दसा घनआनंद जीव को जीवनि जान ही जाने।[16]

घनानंद की विरहाग्नि व्यथा अकथनीय है, असीमित है। वह निरंतर इस विरह के दावानल में विदग्ध होते रहते है। प्राण निकल नहीं पाते हैं।

बिन जान सजीवन कौन हरै सजनी बिरह विष की लहरें।[17]

चारों ओर की प्रकृति, ऋतुएँ, पर्व, त्यौहार सभी घनानंद को सालते हैं। वह प्रेयसी के विरह में अप्रसन्न रहते है। सृष्टि के तमाम उपादान उनकी विरह व्यथा को कमतर करने की बजाय उसमें और अधिक इजाफा कर देते हैं। विरह की पीड़ा और प्रेयसी की वियोगजनित तड़प में वह अपनी आत्मदशा, आत्मनिवेदन को भी वाणी प्रदान करते हैं। प्रेयसी का कठोर आचरण उनके जीवन में प्रेम-वैषम्य की स्थितियाँ उत्पन्न कर देता है। प्रिया का रूप उनके भीतर बेचैनी को बढ़ा देता है। उदाहरण द्वारा वह अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हैं।

पहिलै घनआनंद सीचि सुजान कही बतिया अति प्यार-पगी।
अब लाय वियोग की लाभ बलाय बढ़ाय बिसास-दागनि दगी।
अंखिया दुखियानी कुबानि परी न कहूँ लगै कौन घरी सु लगी।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

मति दौरि थकि न लहै ठिक ठौर अमोही के मोह मिठास लगी।।[18]

घनानंद ने प्रेयसी की स्मृतिजनित पीड़ा का भी स्वाभाविक वर्णन किया है। अपनी बेबसी और प्रिया की निष्ठुरता उनके हृदय की बेचैनी बढ़ा देती है। उदाहरण द्वारा वह अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हैं।

आस लगाए उदास भए सु करी जग में उपहास कहानी
सक बिसास की टेक गहाय कहा बस जौ उर ओर ही ठानो
एही सुनान सनेही कहाय दई कित बोरत है बिन पानी
यौं उघरे घनआनंद छाय के हाथ परी पहचानी पुरानी।[19]

एकनिष्ठ प्रेमी के रूप में घनानंद का वर्णन अत्यंत मर्मस्पर्शी बन जाता है।

अंग अंग मेरे उन ही कै संग रंग रंगे
मन सिंघासन पै विराज तिन ही को ध्याना

विरहाकुल घनानंद अपनी और प्रेयसी की स्थिति के वैभिन्न्न को भी वर्णित करते हैं।

सुखनि समाज साज सजै तित सेर्वे सदा
जित नित नए हित फंदिन गसंत है।
दुःखतम पुंजनि पठाय दै चकोरनि पै
सुधाकर जान प्यारे भले ही लसत हौ।[20]

घनानंद प्रेयसी से विनम्र निवेदन करते हुए कठोर आचरण न करने का आग्रह भी करते हैं।

प्रानन के प्रान एहो सुंदर सुजान सुनौ
कान धरि बात नेकु मेरी ओर चाहियै .....
संब विधि लायक नवल नेही नायक हौ,
कहाँ लौ रसीले गुन गननि सराहियौ।

कविवर प्रेयसी को प्राकृतिक माध्यमों अर्थात् पवन और मेघ के द्वारा विरह संदेश भी पहुँचाते हैं।

ऐरे बीर पौन तेरो सबै और गौन बारी
तो सो और कौन, मन ढरकोही बानि दे।।[21]

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

घनानंद प्रेम की अति तीव्रता के कारण अपने विफल प्रेम के लिए भाग्य को कोसते हैं जिसके कारण उनकी यह दशा हो गई है। लेकिन सुजान को किसी भी तरह से उत्तरदायी नहीं मानते हैं। अंततः प्रेम की पराकाष्ठा के तहत वह सुजान को अपने प्राणों की भेंट समर्पित करना चाहते हैं। कवि अपनी स्वानुभूत पीड़ा की तन्मयता में ही जीवन बिताना चाहता है।

घनानंद और ब्रज महात्म्य

ब्रज प्रसाद, ब्रज स्वरूप, ब्रज विलास, धाम चमत्कार-ब्रज व्यवहार आदि रचनाओं में ब्रज का महत्त्व, सुख-वैभव तथा पावन भूमि के प्रति अपने प्रेम के श्रद्धासुमन अर्पित किये हैं। ब्रज, यमुना, गोकुल, वृंदावन, गोवर्द्धन, बरसाना और कृष्ण मुरली के कारण ही कवि के अशांत और आहत जीवन को अलौकिक दिशा प्राप्त हुई थी। विफल प्रेमी जीवन इसी भूमि के पावन प्रभाव से सार्थक हुआ था। यह कृष्ण-राधा की लीला भूमि है। इसलिए कवि इनका यशोगान अपनी रचनाओं में कर पुण्य प्राप्त करते हैं। उदा-

जमुना के तीर केलि कोलाहल भीर ऐसी
पावन पुलिन पै पतित परि रहि रे।।[22]

घनानंद और प्रकृति वर्णन

घनानंद ने प्रकृति को बाह्य चित्रण के तहत उद्दीपक रूप में वर्णन किया है। उनकी रचनाओं में प्रकृति-वर्णन स्वतंत्र रूप से शुमार नहीं किया गया है। कवि ने प्रेम, सौन्दर्य-वर्णन की ही तरह प्रकृति चित्रण भी परंपरा व लीक से हटकर ही किया है। प्रकृति उनकी विरह-वेदना की प्रस्तुति का माध्यम बनी है। कवि ने श्रावणी, बूंदों, चाँदनी, निशा, सुरभित कमल, विभिन्न सुगंधियों चातक आदि को संबल बनाकर अपने विरही मन के उदगारों को अभिव्यक्ति प्रदान की हैं।

"विकल विषाद भरे ताही की तरफ तकि
और कारी क्रूर कोलिक कहा को बैर काढ़ति री।"

उपरोक्त छंदों में प्रकृति उपादानों द्वारा अनोखे ढंग से विरहाभिव्यक्ति की गई है। एक अन्य दृश्य उनके प्रकृति वर्णन का मनोहारी एवं सजीव चित्रण उपस्थित करता है।

छाय परदेस जान प्यारे संग लै संदेस,
मो मन अंदेस आली सासनि रूधै गरे।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

मोरनि की कूकै सुनि उठति तिये मैं हूकै,
चूके नहीं चातिक करे जो काढ़िवै अरै।
दामिनी का काध लखि चौधनि भरत चख
अंग अंग सीरियौ समीर परसै जरै।
घेरि चूंटि मार चंदूधा तै घनआनंद यौ।
बादर अडबरनि डांवाडोल ज्यौं करै।[23]

इनके काव्य में किसान की चर्चा भी अपवाद रूप में प्राप्त होती है। कवि के अलावा किसी भी स्वच्छन्द कवि ने बेचारे किसान की चिंता पर कोई भी रचना नहीं लिखी। स्वच्छंद कवि घनानंद की यह अनूठी पहल कही जा सकती है। अतः हम कह सकते हैं कि वियोगी कवि ने भावाभिव्यक्ति का उपकरण प्रकृति को भी बनाया है।

घनानंद और भक्ति

घनानंद काव्य में प्रेयसी की बेरूखी और उपेक्षा के कारण उनका अत्यधिक प्रेम अंततः भक्ति में परिणत हो गया। इस भक्ति को हम विरहभक्ति भी कह सकते है। ब्रज पहुँचकर वे निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षित हो गए थे। उनकी भक्तिपरक रचनाओं के आधार पर ही विद्वानों ने इन्हें वल्लभ संप्रदाय के साथ-साथ हित हरिवंश संप्रदायी भी माना है।

नित हित संगी मनमोहन त्रियंगी मेरे प्राननि अधार नंद नंदन उदार है।
ऐसो दसा जग छायो अंधेर बिना हित मरति कौन संभारे।[24]

घनानंद काव्य में भक्ति के विविध रूपों के तहत् सख्य, कांता और दास्यभाव की भक्ति रूप मिलते हैं। कृष्ण, गोपियों को आधार बनाकर कवि ने अपनी प्रेमाभक्ति को रूपाकार प्रदान किया है।

मोरे मितवा तुम बिन रहये न जाये
विषम वियोग जरावै, जियारा सहयौ न जाय।
निपट अधीर पीर-बस हियरा गहयौ जाय।
आनंदघन प्रिय बिछुरन का दुःख कयौ न जाय।[25]

लाला भगवानदीन के अनुसार ये सखी भावना के उपासक और विरह के सच्चे भावुक थे। [26]

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

घनानंद की भक्ति में आत्मतरलता और आत्मसमर्पण की भावना प्रमुखतः मिलती है।

सदा कृपा निधान हौ, कहा कहौ सुजान हौ।
अमानि दान मान हो, समान कहि दीजिए।[27]

यहाँ कवि ने अपनी भक्ति दैन्य भाव से वर्णित की है। वह मानते थे कि समस्त छली संसार में राधा-कृष्ण की युगल जोड़ी से ही भगवद कृपा प्राप्त करनी चाहिए। उन्होंने अपनी भक्ति द्वारा सदैव ही प्रभु के सामीप्य की इच्छा व्यक्त की है, मोक्ष की नहीं।

ऐसे रसामृत पुंजहि पायकै को सठ छोलर छीहै।
जाकी कृपा नित छाय रही दुःख ताप तै बौरे बचाय हो ली है।
द्व उर एक भये धुरी कै घनआनंद सुद्ध समीप लहयौ है।

अतः हम कह सकते हैं कि अपने मधुर और सुकुमार भावों द्वारा कवि ने सरल और सहज भक्तिपूर्ण रचनाएँ लिखी हैं।

घनानंद और दर्शन

स्वच्छंद कवि ने यद्यपि अपनी रचनाओं में किसी विशेष दार्शनिक सिद्धांत को प्रतिपादित नहीं किया है, परन्तु फिर भी उनकी रचनाओं में हमें प्रेम तथा सौंदर्य-वर्णन में अनायास ही दार्शनिक विचार प्राप्त हो जाते हैं। उनकी काव्य-रचनाओं में दर्शन और रहस्यानुभूति के विचार यत्र-तत्र मिलते हैं। सखी भाव के कारण ही इनके काव्य में रहस्यात्मक-गोपनीय भाव विद्यमान है। घनानंद ने अपने ईश के सगुण रूप को ही चित्रित किया है। इनकी रचनाओं में निर्गुण रूप अत्यल्प प्राप्त है। कवि की रहस्यानुभूति भी प्रेम आधारित है। प्रेयसी की झलक को उन्होंने चिन्मयस्वरूप की झलक माना है।

चेटक रूप-रसीले सजान दइ बहुतै दिन नेक दिखाई
कौंध में चैंध भरे चख हाय, कहा कहौ हेरनि ऐसे हिराई।
बातें बिलाय गई रसना पै हियौ उमग्यौ कहि हिराई एको न आई।
सॉचं कि संभ्रम है घनआनंद सोचनि ही मति जाति समाई।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

घनानंद काव्य में कहीं-कहीं सूफीदर्शन जैसी ब्रहम वियोग की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है।

अन्तर है किधौ अन्त रहौ दृग फारि फिरौ कि अभागिनी भीरौ।
आगि जरौ अकि पानि परै अब कैसी करौ हिय का विधि धीरौ।
जो घनआनंद ऐसी रूची तौ कहा बस है अहा प्राननि पीरौ।
पाऊँ कहाँ हरि-हाय तुम्हें धरनी मैं धंसौ कि अकासहि चीरौ।[28]

कवि की इस संदर्भ में विशेषता रही है कि उन्होंने अपनी दृष्टि व अपनी शैली के ही सूफी प्रभाव को ग्रहण किया है, लादा नहीं है। घनानंद ने जीव संबंधी अपने विचारों में माना है कि परमात्मा तो हमारे निकट है लेकिन अपनी अज्ञता के कारण उनसे दूर है।

'हम संग किधौ तुम न्यारे रहा,
तुम संग बसौ हम न्यारी रहै।[29]

घनानंद का मानना है कि मुझ जैसे जीव पर सदैव ही राधा-माधव की कृपा की वर्षा होती रहती है और मैं सदैव ही उनके कृपा रस में भीगा रहता हूँ। घनानंद ने इस संसार को नश्वर तथा असार ही माना है। वह जीवन को छल मानते हैं। इस सांसारिक छलावे में ही जीव उलझा रहता है। वह जीव को संसार के इस छल से सावधान भी करते हैं-

अजो चति जड़ जीवन किन, किन आयो जैबो कहाँ।

वास्तव में हम कह सकते हैं कि कवि की दार्शनिक अनुभूति यथार्थ की अभिव्यक्ति है। घनानंद के अनुभूति पक्ष का समग्र अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि कवि के काव्य में स्वच्छंद काव्यधारा की समस्त विशेषताएँ प्राप्त होती है। मसलन भावों के तीव्र मनोवेग, स्वच्छंद प्रेम, वैषम्य और प्रेम की पीर, लौकिक और अलौकिक भक्ति भावना, आत्मनिवेदन शैली, वैयक्तिकता, वियोग, वैराग्य तथा लोक जीवन से जुड़ाव की प्रवृत्ति, उपरोक्त सभी दृष्टियों से कवि का भावपक्ष अत्यंत समृद्ध है।

बहरहाल, घनानंद काव्य में भावपक्ष की प्रधानता है। कवि ने लगभग सभी बाह्य और आंतरिक भावों का सूक्ष्मता से चिंतन किया है। कवि ने अपनी आत्मिक बेचैनी को अत्यन्त गंभीरतापूर्ण शैली में रूपाकार प्रदान किया है। रीति-मुक्तता के कारण इनका काव्य भावों की सघन गहराईयों से परिपूर्ण है। लिहाजा कवि

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

ने अपने काव्य में जीवन के सार्वभौमिक भावों और उदात्त प्रेम की जो स्थापना की है, वह अतीत, वर्तमान, भविष्य तीनों कालों में लोक मानस के भीतर प्रतिष्ठित रहेगा।

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

संदर्भ

[1] घनाआनंद ग्रंथावली सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ. 152

[2] सुजानहित-407

[3] सुजानहित-61

[4] सुजानहित-355

[5] घनानंद संवेदना और शिल्प, डॉ. राज बुद्धिराजा, पृ. 32

[6] घनानंद और स्वच्छंद काव्य धारा - डॉ. मनोहर लाल गौड़, पृ. 45

[7] सुजानहित हित, छंद सं. 471, घनानंद ग्रंथावली, सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ. 141

[8] घनानंद कवित्त- सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, सं. 403

[9] घनानंद कवित्त- सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, सं. 406

[10] घनानंद कवित्त- सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, सं. 406

[11] घनानंद ग्रंथावली (प्रकीर्णक), छ.सं. 19

[12] सुजानहित, पृ. 261

[13] सुजानहित, पृ. 116

[14] सुजानहित, पृ. 116

[15] सुजानहित, छन्द सं. 3

[16] सुजानहित- छंद सं. 4

[17] वही., छंद सं. 5

[18] सुजानहित, छं.सं. 6

[19] सुजानहित, छं.सं. 101

[20] सुजानहित, छं.सं. 102

[21] सुजानहित, छं.सं. 259

[22] घनानंद, ज्ञानवती त्रिवेदी, पृ. 44

[23] सुजानहित, छ.सं. 157

[24] घनानंद, ज्ञानवती त्रिवेदी, पृ. 46

[25] घनानंद, ज्ञानवती त्रिवेदी, पृ. 39

[26] रसखान और घनानंद, बाबू अमीर सिंह, द्वितीय संस्करण, पृ. 39

[27] घनानंद, ग्रंथ सुजान हित, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, छं.सं. 352

[28] घनानंद, ग्रंथ. सुजान हित, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, छ.सं. 416

[29] घनानंद ग्रंथावली (सुजान हित), आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ. 493

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 May 2021

संदर्भ ग्रंथसूची

1.	घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा	-	डॉ. मनोहरलाल गौड़, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2029 वि.
2.	घनानंद संवेदना और शिल्प	-	डॉ. राज बुद्धि राजा
3.	घनानंद	-	ज्ञानवती त्रिवेदी
4.	घनानंद ग्रंथावली	-	सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
5.	घनानंद काव्य और आलोचना	-	डॉ. किशोरी लाल
6.	रीतियुगीन काव्य	-	डॉ. कृष्णचंद्र वर्मा